मूल्य रु. ५-००

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की ११ तारीख • सलंग अंक १११ जुलाई-२०१६

श्री नरनारायणदेव केशर स्नान समय का दर्शन

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

(१) इडर के पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी का अभिषेक दर्शन तथा सभा में आशीर्वाद देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।(२) नारायणघाट मंदिर में केशर स्नान के बाद आरती उतारते हुए अमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी हरिकृष्णदासजी तथा नारायणघाट मंदिर के महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी ।(३) पेथापुर मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर प.पू. लालजी महाराजश्री को पुस्तक भेंट देते हुए महंत स्वामी ।(४) कुजाड मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकरुजी का अभिषेक करते हुये प.पू. आचार्य महाराजश्री साथ में पू. पी.पी. स्वामी ।(५) न्यु राणीप मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर अन्नकूट दर्शन ।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १० ● अंक : १११

जुलाई-२०१६

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	पूर्णानंद स्वामी	०६
०४.	निज जना प्रतिपाल, सुखकारीजी !	०८
०५.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुख से अमतृवचन	१०
०६.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१३
०७.	सत्संग बालवाटिका	१५
०८.	भक्ति सुधा	१७
०९.	सत्संग समाचार	२०

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

શ્રી સ્વામિનારાયણ

अस्मदीयम्

આપણા ઈષ્ટદેવ સર્વોપરી શ્રી સ્વામિનારાયણ ભગવાને આજથી ૨૦૦ વર્ષ પહેલા જે સમયે વરસાદ નિયમિત તેના સમયે ખૂબજ સારો થતો તેવા સમયમાં કૂવા, વાવ, તળાવો જાતે શ્રમ કરી ખોદાવતા. વૃક્ષો વાવી તેનું જતન કરાવતા. તે પરંપરા તેમના ધર્મકુળ પરિવાર પ.પૂ. મોટા મહારાજશ્રી, પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રી ને પ.પૂ. લાલજી મહારાજશ્રીમાં જોવા મળે છે. શ્રી સ્વામિનારાયણ બાગ (પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રીનું નિવાસ સ્થાન) શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યુઝિયમ આદિ જગ્યાએ દર વર્ષે નવા અનેક છોડ રોપા ઉગાડવામાં આવે છે જેથી ત્યાં ગમે ત્યારે જોવો તો લીંલુ છમ દેખાય.

જ્યાં ખૂબજ વૃક્ષો હશે ત્યાં હરિયાળી હશે. વરસાદ પણ ત્યાં ખૂબ પડે છે. આખા વિશ્વમાં આપણા ભારત દેશના ચેરાપૂંજીમાં સૌથી વધારે વરસાદપડતો. ત્યાં જંગલમાં નીચે સૂર્યનો પ્રકાશ દેખાતો નહીં એટલા ગાઢ જંગલો હતા. આજે ત્યાં પણ માણસોએ જંગલો કાપી નાખ્યા છે તેથી પહેલા જેટલો વરસાદ પડતો નથી. આ બધી આપણી દેન છે. આપણે જંગલો સાફ કરવા માંડ્યા છે. પર્યાવરણનું જતન કરવાને બદલે ઘોર ખોદી રહ્યાં છીએ. આપણા દેશમાં હાલ ચોમાસાની ઋતુ છે. પણ હજુ સુધી કોઈ નદી, તળાવો ડેમો ભરાય એટલો વરસાદ પડ્યો નથી. સર્વોપરી શ્રી સ્વામિનારાયણ ભગવાનના આપસૌ આશ્રિતોએ આ ચાતુર્માસમાં એવું નિયમ એક વધારે લે જો કે પરિવારના જેટલા સભ્યો હોય તેટલા વૃક્ષ વાવજો. ખરેખર આપ સૌ તેનું પાલન કરશો જ એવી અમને શ્રધ્ધા છે. અને ત્યારે સમગ્ર ગુજરાતમાં દશ વર્ષમાં આપણને હરિયાળી ક્રાંતિ જોવા મળશે. આવા સુંદર કાર્યોથી આપણા ઈષ્ટદેવ પણ રાજી થશે.

આગામી અષાઢ સુદ-૧૫ ગુરુ પૂર્ણિમાના રોજ આપણા કાલુપુર શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિરમાં આપણા સૌના ધર્મગુરુ પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્ય મહારાજશ્રીના પૂજન-અર્ચનમાં લાભ લેવા આપ સૌને પધારવા અમારું નમ્ર સૂચન છે. તે જ રીતે અષાઢ વદ-૧૦ ના પ.પૂ. લાલજી મહારાજશ્રીના જન્મોત્સવ પ્રસંગે પણ સમસ્ત સત્સંગને પધારવા ખાસ આગ્રહભર્યું આમંત્રણ છે.

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

श्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(जून-२०१६)

१ से १४ ईग्लेन्ड तथा अमेरिका में अपने मंदिर के पाटोत्सव तथा कथा प्रसंग पर पदार्पण।

१७ सलुन्द्रा गाँव में कथा पारायण प्रसंग पर पदार्पण।

१८ श्री स्वामिनारायण मंदिर इडर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२४ श्री स्वामिनारायण मंदिर ऊँझा ७५ वें वार्षिक पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२५ श्री स्वामिनारायण मंदिर वावोल पदार्पण वहाँ से श्री स्वामिनारायण मंदिर माणसा, श्रीहनुमानजी के प्राण प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।

२६ प.भ. रमेशभाई पटेल (गवाडावाला) के यहां पदार्पण, सायन्स सीटी वहां से श्री स्वामिनारायण म्युजियम प.भ. विरजीभाई हालारीया की तरफ से आयोजित श्री नरनारायणदेव के अभिषेक प्रसंग पर पदार्पण।

२७ खारवा गाँव में (मारवाडी देश) नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर में खात मुहूर्त प्रसंग पर पदार्पण।

२८ श्री स्वामिनारायण मंदिर बाकरोल पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२९ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपु रमें संत महा दीक्षा अपने वरद् हाथो वेदोक्त विधिसे संपन्न किये।

श्री स्वामिनारायण

॥ पूर्णानंद स्वामी ॥

– साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

स्वामिनारायण भगवानने संप्रदाय का सर्व प्रथम मंदिर बनवाकर उसमें अपनी बांहो में भरकर श्री नरनारायणदेव को प्रतिष्ठित किये । इसके बाद मंदिर के आगे गद्दी तकिया रखवाकर विराजमान हुये, उसमें श्वेत उत्तरीयवस्त्र धारण किये थे, मस्तक पर श्वेत रक्त की पगड़ी बांधे थे, पगडी में गुलाब के फूलों का गजरा लगाये थे, पगडी में से इत्र की सुगंधफैल रही थी । कान के ऊपर गुलाब फूल का गुच्छा धारण किये थे । कंठ में गुलाब पुष्पकी माला धारण किये हुये थे । उसी समय महाराजने कवि सम्राट सगु. पूर्णानंद स्वामी से कहा कि स्वामी ! कीर्तन गाइये ।

स्वामीने चारण शैली में परजराग में सितार के ऊपर कीर्तन प्रारंभ किया ।

''छोगलियुं तारु छेल रे...

पूर्णानंद के छोगलुं मो' यु' छे मनडुं मारुं रे''

इसके बाद श्रीजी महाराजने कहा कि स्वामी आपके अंतिम समय में मैं इसी स्वरुप में लेने आयेंगे ।

ऐसा वचन सुकनर स्वामी उस बचन को अपने हृदय में धारण कर लिये ।

कविराज अंतिम अवस्था में अपने ननिहाल साणंद के पास चंद्रासण में रहते थे । स्वयं अत्यन्त वृद्ध होने के कारण मकान के सामने वृक्ष के नीचे खाट पर बैटे-बैठे कीर्तन गाते और बनाते थे । अंतिम समय में ब्रह्मानंद स्वामी, मुक्तानंद स्वामी इत्यादि बड़े संत अक्षरधाम में ले जाने के लिये आये, उस समय उन्होंने कहा कि आपके साथ अक्षरधाम में हम नहीं जायेंगे कारण यह कि महाराजने हमें बचन दिया है कि अंतिम अवस्था में हम स्वयं आपको लेने आयेंगे । मैंने जब उन्हें ''छोगलियुं तारुं छेल रे'', इस कीर्तन को सुनाया तब उन्होंने कहा कि इसी रुप में मैं आपको लेने आऊँगा । मुझे विश्वास है कि इसी रुप में वे मुझे लेने आयेंगे ।

मैंने महाराज की आज्ञा का कहीं लोप नहीं किया है । इस लिये महाराज लेने आयेंगे तभी हम जायेंगे । संतो के अदृश्य होने क बाद तीन दिन तीन रात कीर्तन गाते रहे इसलिये दास की टेक रखने के लिये महाराज माणकी घोड़ी पर बैठकर स्वामी को लेने आये । कविराजने कहा कि हमें अकेले को आप लेजायेगे और आपके दर्शन का सुख किसी को नही मिलेगा तो लोगो को कैसे खबर पडेगी ? इसलिये गाँव के लोगों को दर्शन देकर हमें लेजाइये । भक्तराज की सभी इच्छापूर्ण करने के लिये चंद्रासण गाँव के सभी लोगो को दिव्यरुप से दर्शन देकर अपने धाम में ले गये । यह वात ऐसी है कि श्रीजी महाराज के अत्यन्त प्रिय अष्टकवियो में सूर्य के समान प्रथमपंक्तिवाले कवीश्वर स.गु. पूर्णानंद स्वामी थे ।

श्रीजी महाराज मेमका गाँव में पधारे थे, उस समय उनका दर्शन करने के लिये मेथाण से अजोभाई आये उनके साथ कविराज गजा गढवी मस्तक पर पगड़ी बांधकर अपने पोषाक में वहाँ आये है । श्रीहरि उस समय मेमका की नदी में स्नान करके वापस आ रहे थे । उनकी चाल से निश्चय हो गया कि ये भगवान है । इस प्रकार की चाल सामान्य व्यक्ति की नहीं हो सकती ।

''जहाँ न पहुंचे रवि, वहाँ पहुंचे कवि'' ।

श्रीहरिने कविराज का परिचय पूछा तो भी कविके मन में थोड़ी भी शंका नही हुई।

कविने कहा कि हमारा गाँव विरमगाँव के पास हेबतपुर है। टापरिया चारण जाति के मेरे पिता का नाम दादाभाई है। ''चितडुं रे चोर्युं रे चटकली चाल मां रे'' इस कीर्तन को गाया। गजा गढवी के बड़े भाई तालुकदार गरास की व्यवस्था संभालते थे। ध्रांगध्रा राज्य का दशवां भाग मिलता था। ध्रांगध्रा के राजा रणमलसिंह ने गजा गढवी को भुज की पाठशाला में पिंगल शास्त्र का अभ्यास करने के लिये रखा था।

गजा गढवी भरयुवानी में घर की वैभव शालिता को छोड़कर भगवान स्वामिनारायण के चरण में मांथा मुंडाकर पूर्णानंद हो गये। उनका सुमधुर कंठ था। पहाडी राग में श्रीहरि को गीत सुनाकर प्रसन्न करते थे। अष्ट कवियों में प्रथम स्थान के कवि थे।

श्रीहरि पूर्णानंद स्वामी की खूब मर्यादा रखते थे. जब सभा में आते उस समय सभी को उनके सन्मान में खड़े होने की महाराजने आज्ञा की थी। इस आज्ञा का सभी संत हरिभक्त पालन करते। संतो हरिभक्तोंकी परीक्षा स्वयं श्रीहरि करते। इसी परिप्रेक्ष्य में पूर्णानंद स्वामी का भी अवसर आ गया।

निश्चय में कोई फेरफार नहीं सत्संग करते तथा महाराज के सामने ही कीर्तन गाते अन्य के सामने नहीं.

एकवार नरनारायण मंदिर अमदावाद में दर्शन करने गये, उस समय साधुओं की धर्मशाला में पानी पीने के लिये मांगे तो कोई ध्यान नहीं दिया कविराजने दोहा बोला –

''कहेवाता पूर्णानंद स्वामी बोलतो अमृतवाणी।
करतो घीना कोगला पीवा आयो पानी।

यह सुनकर वासुदेवानंद स्वामीजीने प्रसादी का जल पीने के लिये दिया। एकवार पूर्णानंद स्वामी के पेट में दर्द हुआ तो प्रतिदिन एक शेर घी का कुल्ला इसी मंदिर में करते थे, वही याद करके यह दोहा बोले।

पूर्णानंद स्वामी के त्यागाश्रम तथा गृहस्थाश्रम के अनेको प्रसंग संप्रदाय में प्रसिद्ध हैं। आदरणीय एडवोकेट श्री सागरदानजी तथा कवि अक्षरदान टापरिया हेबतपुरने पूर्णानंद काव्य में स्वामी का स्थान तथा जीवन वृत्तान्त को लिखा है। उसी को आधार बनाकर जीवन कवन लिखे हैं।

कविराज अन्तिम अवस्था में विरोचन नगर के पास ननिहाल के गाँव चंद्रासण में रहते थे। वहीं पर अक्षरवास होने से स्मृतिरुप हरि मंदिर बनाया गया है। इसके अलांवा हेबतपुर जन्म स्थान में नया मंदिर बनाया जा रहा है। इसके साथ ही स्वामी जो गिटार बजाते थे उसे सुरक्षित रखा गया है। धन्यवाद है उनके वंशजो को जो उनके कारण ऐसी प्रसादी की वस्तु का दर्शन होता है। पूर्णानंद स्वामी के जीवन कवन का प्रसंग बडा ही चमत्कारिक है। ''मेरा योग तथा मुक्त सभी दिव्य है'' कुछ संदेश, कुछ उपदेश जीवन में छिपा हुआ है। आश्रम बदल गया लेकिन परिश्रम नहीं बदला। अनेक राजा महाराओं के प्रलोभन पर भी कविराज विचलित नहीं हुए, बल्कि गुण गाये तो श्रीहरि का ही।

हेबतपुर गाँव विरगाँव से ध्रांगध्रा रोडप र १८ कि.मी. के अन्तर पर आया है।

श्री स्वामिनारायण मंदिर मासिक अंग प्रकाशन हेतु सूचना

प्रश्न पेटी के प्रश्नोत्तर २२ तारीख तक भेजे, उसके बाद स्वीकार्य नहीं किया जायेगा।

सत्संग समाचार प्रकाशित हेतु २२ तारीक तक भेजे। उसके बाद भेजे हुए सत्संग समाचार अंको में नहीं छापे जायेगे।

॥ નિજ જનના પ્રતિપાળ, સુખકારીજી ! ॥

- अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला (अमदावाद)

जहाँ पर संतो के वस्त्र को रंगने के लिये गेरु मिट्टी मिलती है, उस रामपरा गाँव में बेहचर पटेल बहुत बड़े किसान थे । १०० विघा जमीन थी । श्रीहरि के सन्निष्ठ सत्संगी थे । वे सदा दशांश-विशांश धर्म के लिये दान करते थे । दूसरे नियम भी निश्चित रुप से पालन करते थे ।

उस जमाने में चोर डाकुंओ की बहुत डर थी । गेहूँ-बाजरा खेत में पककर तैयार होता और उसे ऊपर से काट ले जाते । एकबार बेचर भगतने १०० विघा जमीन में फसल लगाये उसी समय भगत के घर महाराज पधारे । भगत ! आपके खेत की रखवाली हम करेंगे ।

महाराज ! आप तो भगवान है, आप खेत की रखवाली करेंगे ।

देखो भगत ! आप अपने कमाई का दशवां-वीसवां भाग हमें देते हैं या नही ? इसलिय हमें खेत की रखवाली करने दो । महाराज प्रति रात्रि में माणकी घोडी पर सवार होकर खेत के चारो तरप घूमने रहते ? बगल के एक खेत में मुसलमान का खेत था । वह अपने खेत की रखवाली करता था, वह महाराज को बेचर भगत के खेत की रखवाली करते देखता था । एक दिन वह मुसलमान भाईने बेचर भगत से कहा कि पटेल ! आपके खेत की रखवाली करने वाला कौन है ? कोई नया लगता है । पटेलने कहा कि ''वे मेरे स्वामिनारायण भगवान है ।'' आप के भगवान आपके खेत की रखवाली करते हैं ? हाँ, हमारे भगवान हम सभी की रक्षा करते है । हमारी, हमारे माल-मिल्कत की, खेत की सभी की रक्षा करते हैं । भगतने विश्वासपूर्वक कहा ।

इसके बाद वह मुसलमानभाई महाराजको मिला, महाराज का गुण भाव उसमें आया और वह सत्संगी बन गया । श्रीजी महाराज शीतकाल में वडताल में उत्सव किये । गेहूं की पाक तैयार हो गई थी । काटने की सीजन चल रही थी । संतोने कहा, ''महाराज ! इस समय उत्सव रखे हैं ? संतो ने कहा कि गेहूँ तैयार तो हो गया है लेकिन किसान आयेंगे कैसे ? महाराज ने कहा, ''इसी लिये हम उत्सव करने का विचार किये है । देखें तो कितने भक्तों को मेरे दर्शन की इच्छा है और उत्सव में आने की आतुरता है । गांफ गांव वैसे पहल से सत्संगी था । सभी सत्संगी एकत्र हुए, वडताल में उत्सव है, महाराज की पत्रिका भी आई है, इधर गेहूँ काटने का समय है, कैसे क्या करे ? एक के बाद एक सब गेहूँ काटने की वात किये और महाराज का दर्शन तथा उत्सव में जाने को गौड समझे । उस गाँव के कुछ ही भक्त खडे होकर कहने लगे, हम तो अवश्य उत्सव में जायेंगे और महाराजका दर्शन करेंगे । हमारे खेत का तथा खेत में गेहू का जो भी होता हो वह हो । किसी ने कहा कि अरे भाई, खड़ी पाक तैयार गिरगई तो क्या होगा ?

महाराज जो करेंगे वह अच्छा ही होगा । अद्‌भूत श्रद्धा के साथ भक्त महाराज के दर्शन हेतु निकल पडे । वडताल में बहुत बड़ी सभा लगी है, महाराज सभी भक्तों को पहचानते थे, एक-एक का नाम लेकर बुलाने लगे । ''गांफ से आये है ? इतने ही लोग आये हैं ? दूसरे भक्त कहाँ है ? ''महाराज ! इस समय गेहूँ की

सीजन है वे लोग उसी के लिये रुके हुए है, गेहूँ कटने वाला है न ? अच्छा हुआ, हमें सभी की चिंता थी, अब आप सभी की चिन्ता ! महाराज मर्म भरी बात कहे।

उत्सव बड़े उल्लासके साथ संपन्न हुआ । वे भक्त आनंद के साथ घर आये। गाँव के दूसरे भक्तों को मिले। उधर ऐसा हुआ कि गेहूँ काटकर सभी खलिहान में ले आये संयोग वश कही से अग्नि की चिनगारी उस खलिहान में आई और देखते-देखते में वह विराट रुप ले ली और सभी के गेहूँ खाक हो गये। जो भक्त महाज के दर्शन हेतुग ये थे उनके गेहूँ तो खेत में थे इसलिये वे बच गये। गाँव के अन्य भक्त कहने लगे 'अब क्या करें ? जो लोग नहीं गये उनका सब नष्ट हो गया, जो गये उनका बच गया।

यह कहा जा सकता है कि महाराज के आश्रितों की बलिहारी । अपार निष्ठा, सूम्पूर्ण आश्रय रखे तो महाराज धन-माल मिलकत सुब कुछ की रक्षा करें।

श्रीजी महाराजने गृहस्थाश्रमियों को अपने उद्यम से प्राप्त जो धनधान्यादिक हो उसमें से दशांश-वीशांश भाग भगवान श्रीकृष्ण को अर्पण करने की आज्ञा की है। इस रहस्य को समझना चाहिए। ऊपर के दोनो दृष्टांत तो हैं की, इसके अलांवा आज भी जो निष्ठावान गृहस्थ श्रीहरि की आज्ञा का पालन कते है, उनकी सर्व विधचिंता स्वयं श्रीहरि करते है, इसमें थोडा भी संदेह नहीं है, बस अपने विचारो में परिवर्तन लाने की जरुरत है।

श्री स्वामिनारायण मासिक में प्रसिद्ध करने के लिये लेख, समाचार एवं फोटोग्राफ्स ई-मेईल से भेजने के लिए नया एड्रेस

shreeswaminarayan9@gmail.com

समस्त सत्संगी की जानकारी के लिये

समस्त सत्संग को बताते हुये आनंद हो रहा है कि साधु सुखदायकदास गुरु स.गु. ध्यानी स्वामी हरिस्वरूपदासजी वडताल श्री लक्ष्मीनारायणदेव देश के नागरिक संत थे । अब वे अमदावाद श्री नरनारायणदेव देश में रहने आ गये हैं इसलिये श्री नरनारायणदेव देश के नागरिक हो गये हैं। इसकी सभी सत्संग को जानकारी हो।

श्री नरनारायणदेव के २४ कलाक दर्शन के लीये देखिये वेबसाईट

www.swaminarayan.info
www.swaminarayan.in

भारतीय समय अनुसार आरती दर्शन : मंगला आरती ५-३० ● शृंगार आरती ८-०५ ● राजभोग आरती १०-१० ● संध्या आरती १८-३० ● शयन आरती २०-३०

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुख से अमतृवचन

- संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा
(हीरावाडी-बापुनगर)

हर्षदकोलोनी (बापूनगर) स्वामिनारायण मंदिर छठ्ठे पाटोत्सव प्रसंग पर ता. २२-५-१६ महाराजने हम सभी के ऊपर बडी कृपा की है कि अवार-नवार कथा जैसे आयोजन से सत्संग का पोषण होता रहता है। इस विस्तार में यह मंदिर तो सबसे पुराना है। समयान्तर में इस समय सुविधा बढ गई है । महाराज का पक्ष रखें तो महाराज भी सभी सुविधा प्रदान करते हैं।

महाराज के चरित्रों को सुनने में शांति है। हम लोग इधर-उधर व्यर्थ भटकते हैं। एक जगह पर हमने देखा कि इस समय ४५° या ५०° डीग्री की गरमीमें कथा मंडप में ४-५ श्रोता सो गये थे । अन्यथा इस गर्मी में नींद आ सकती है ? कितने गद्दे पर भी शांतिकी नीद नहीं लेपाते। परंतु विना विदावन के श्रोता कथा मंडप में सो गये । कितने भक्तों को ऐसी टेव होती है कि सुबह उठते ही समाचार पत्र वांचते हैं, यह बड़ी खराब टेव है। कारण यह कि इसके बाद पूजा मे मन नहीं रहता। इसी लिये महाराजने कहा कि हमारे आश्रित प्रात: उठकर भगवान का ध्यानन-स्मरण करें । स्नान करके मानसी पूजा तथा प्रत्यक्ष पूजा करें । इससे मन भगवान की मूर्ति में रहेगा, अन्यथा जगत का प्रयत्न तो करना ही है।

एक हरिभगत महाराज के पास आया। महाराज से कहा कि महाराज ! उद्वेग रहता है कोई उपाय बताइये । महाराज ने कहा कि छपैया में मैं जन्म लिया । कालिदत्त का नाश किया । बालमित्रो के साथ तालाब के किनारे वृक्षो पर घुइलर इत्यादि खेले। इत्यादि वात कहकर महाराज वहाँ से चले गये। दूसरे दिन वही भाई आकर पुन: वहीं प्रश्न किया। महाराज ने कहा कि मैं छपैया से अयोध्या आया। नित्य सरयू स्नान करता, हनुमानगढी इत्यादि स्थानो का दर्शन करता। कथा होती हो तो कथा सुनता इत्यादि कहकर अपने निवास स्थान पर चले गये। वह भाई विचार करने लगा कि महाराज उत्तर नही देते बल्कि वात को बदलकर कुछ और ही कहकर चले जाते हैं । कल अंतिमवार पूछेंगे। तीसरे दिन महाराज आये। महाराज ! आप हमारे उद्वेग का निराकरण नहीं किये। महाराजने कहा कि हम ११ वर्ष की उम्र में गृह त्याग किये । सरयूपार करके पुल्हाश्रम गये, वहाँ कठोर तपस्या किये, इसके बाद बन विचरण किये तथा तीर्थो को

पावन किये। इतना कह कर महाराज अपने निवास स्थान पर चले गये। इसके बाद वह भाई परेशान होकर नंद संतो के पास चला गया ! वहाँ जाकर कहा कि महाराज हमारे प्रश्न का उत्तर नहीं कहते। अपने चरित्र की बात कहते हैं। संतोने उसकी सभी बात जानकर कहा कि भगत ! महाराजने आप के प्रश्न का यथार्थ उत्तर दिया है। महाराज के चरित्र को श्रवण करने से उद्विग्नता दूर होती है। मन में शांति मिलती है। प्रथम आप महाराज की महिमा का विचार कीजिये, बाद में चरित्र को भावपूर्वक सुनिये। बाद में आपके मन का उद्वेग दूर हो जायेगा। वह भाई भगवान के चरित्रो को सुनकर शांति को प्राप्त हो गया।

अपनी कुंडली जिस दिन से महाराज के साथ जुडी उसी दिन से हम सभी की चढती है -

आज तो सही कुंडली देखने वाला कोई नहीं है। कुंडली देखने वाला स्वंय दुःखी है। मानलीजिये कि कोई सच्ची कुंडली देखने वाला मिल गया और उससे सत्संग में आने से पूर्व कुंडली बनवाते हैं तो खबर पडती कि हमारी भाग्य कैसी थी। हम सभी की भाग्य में दो टाईम भोजन के भी लाले थे। परंतु महाराज की कुंडली के साथ हमारी कुंडली मिली, महाराज सहारा मिला कि आज हमारे पास क्या नहीं है। कोई गरीब घर की लडकी विवाह के बाद अमीर के घर जाय तो वह भी अपने आप धनवान बन जाती है। इसी तरह अपनी कुडंली जब से महाराज की कुंडली से मिल गई उसी समय से अपने प्रारब्धमें परिवर्तन आ गया। और सुख की सुख है। कारण यह कि अन्न-वस्त्र का उत्तरदायित्व स्वयं महाराज ने अपने माथे पर लिया है। इसके अलांवा महाराज हम सभी को बड़ी सरलता से मिल गये हैं। न गंगा गये, न गोदावरी, काशी गये, घर बैटे अक्षरवासी मिल गये। हम सभी कौन सा बहुत बड़ा तप किये थे। चांद्रायण जैसा तप भी नही किये। ४-५ दिन का उपवास भी नहीं किये। १५ दिन में एकबार एकादशी आती है, वह भी मिलावट वाला फलाहार करते हैं।

कहने का तात्पर्य यह है कि किसी प्रकार के बड़े तप के विना केवल महाराज के मिल जाने मात्र से सर्वस्व मिल गया है। इसलिये मंदिर, संत, शास्त्र के प्रति अपना पना का भाव रखना चाहिए। प्रत्येक हरिभक्त के प्रति प्रेम का भाव रखना चाहिये। कितने भक्त तो ऐसे होते है कि भाव में आकर महाराज के आसन पर संत या हरिभक्त को बैठा देते हैं। बैठाने के बाद उतारना भारी हो जाता है। इसलिये ऐसा नहीं करना चाहिये। घर के सिंहासन पर महाराज की शुद्ध उपासना का भाव रखकर प्रेम से सेवा करनी चाहिये। आप लोग करते हैं न ? अपने बेटा बेटी का संस्कार तो प्रथम घर से अभिसिञ्चित होता है। भावि पीढी सुरक्षित संस्कारी बने इसका ध्यान रखना चाहिये। धर्म तथा भक्ति भगवान को प्रसन्न करके वरदान प्राप्त करके वृन्दावन से छपैया जाने के लिये निकल गये। जाते समय रास्ते में जंगल आया और वे रास्ता भूल गये। उस समय अश्वत्थामा मिल गये। पूर्व के वैर के कारण श्राप दिये कि आपके घर में जो भगवान अवतरित होंगे वे हाथ में हथियार धारण नहीं करेंगे। धर्म-भक्ति यह वात सुनकर चिंतित हो गये। पूर्व जितने अवतार हुये वे हाथ में हथियार धारण करके असुरों का बधकिये। अपना पुत्र विना हथियार के असुरों का कैसे बधकरेगा। परंतु महाराज को यहाँ पर एक शुरुआत करनी थी। असुर के शरीर का बधकरने से क्या फायदा, उनके भीतर की प्रवृत्ति का ही नाश करे। अपना कौन दुश्मन है ? वस्तुतः कोई किसी के प्रति ईर्ष्या-द्वेष ही विध्न रुप है। महाराजने कहा कि हरिभक्त आपस में प्रेम करे। लेकिन ऐसा होता नही, हम आपस में ही कमी देखने लगते हैं। परिणाम स्वरुप सुख नहीं मिलता। स्वयं को यह ख्याल नहीं हैकि कौन भक्त महाराज की कितनी भक्ति करता है, भजन करता है - फिर भी कही न कही कमी देखने की भावना तो रहती ही है। इसलिये अपनी बुद्धि का उपयोग इसमें न करे स्वयं के अन्तर में देखना चाहिये मंदिर में जब जाते है तब महाराज के सामने बैठने पर अच्छे विचार

आते है। कल मैं एक माला अधिक करुंगा। कारण यह कि हम किसी धातु - पाषाण की मूर्ति के सामने नहीं बैठे है, हम तो प्रत्यक्ष भगवान के सामने बैठे है।

संसार में बहुत सारे ऐसे है कि जिन्हे भगवान की पहचान करनी है, परंतु पहचान कौन करावे ? कोई सच्चा साधु-सत्संगी मिल जाय तो काम हो जाय। बुद्धि, मन, चित्त, अहंकार ये चार भगवान की भजन में कभी सहायक नहीं होते, यह महाराज के शब्द है -

बाकी ईन्द्रियों को जीतने में कोई आपत्ति नहीं है। फिर भी भगवान के दर्शन करते समय किसी प्रकार विक्षेप होने पर भगवान के दर्शन से दृष्टि हट कर उधर ही चली जाती है। तुरंत ऐसा होता है कि वहाँ क्या हो रहा है ? कान से भगवान के चरित्र सुनते हो, उसी समय कोई आकर कहे की आप को कोई बुला रहा है, यह सुनते ही खड़े होकर चल देते है, भगवान से ऊपर की वात हुई न ? जिस का जो अंग हो उसे समझकर उशी अंग से प्रभु की भजन करनी चाहिये। जिसे भगवान के कीर्तन गाने नहीं आवे तो उसे भगवान की माला पिरोने में मन लगाना चाहिये। कितने हरिभक्त रसोई में सेवा करके हरिभक्तों को भोजन की सेवामें लगे रहते हैं। इसी तरह अपने मन को भगवान में स्वत: लगा लेना चाहिये। कहाँ मन स्थिर रहने वाला है इसका अपने को ध्यान देना है।

बाकी जगत में तो हम देखते हैं कि दु:ख का कोई पार नहीं है। जो महाज को पहचाने नहीं है ऐसे लोग आकर कहते हैं कि हमे ग्रह परेशान करते हैं, कही शांति नहीं मिलती है। यह दु:ख है, वह दु:ख है इत्यादि।

एक भाई आकर कहता है किं गुरु परेशान कर रहे हैं, गुरु किसी को परेशान कर सकते हैं क्या ? हां गुरु परेशान अवश्य करते हैं, वही परेशान करते है जो गुरु खोटे होते हैं। ऐसे गुरु में मन लगे तो वे गुरु सुखृशांति की जगह दु:ख ही देते हैं। लोगों की क्या वात ? भगवान की पहचान न होने पर यत्र तत्र चावल चढाते रहते हैं। यहाँ सुख नहीं मिला तो दूसरी जगह चल देते हैं। बाद में तीसरी-चौथी जगह चले जाते हैं।

महाराजने वचनामृत में कहा है कि अपने मन की बात को छोडकर मेरी शरण में आ जाय। इस के अलारां महाराज के वचन ही महाराज के स्वरुप है। जितनी उनकी आज्ञा में रहेंगे उतना सुखी रहेंगे। इसलिये एकमात्र श्री नरनारायणदेव की शरण लेने में सुख है। महाराज के वचन में रहकर जितना हो इतना अधिक से अधिक भजन करते रहना चाहिये। श्री नरनारायणदेव के सामने जो भी शुभ संकल्प करेंगे वह निश्चित ही सिद्ध होगा। यही महाराज का वचन है। यह मेरा वचन नहीं है। इस तरह खूब उपदेशात्मक प्रवचन करके बापूनगर सत्संग के ऊपर प्रसन्नता व्यक्त किये।

बालकों की रंगपूरणी हरिफाई के श्रेष्ठ विजेता

(१) पटेल खुशी घनश्यामभाई नरोतमभाई (मोटप)

(२) पटेल मेघ घनश्यामभाई (मोटप)

(३) पटेल नेन्सी मुकेशबाई (बावला)

प्रोत्साहन ईनाम के विजेता

(१) चौहाण ध्रुवराजसिंह शैलेन्द्रसिंह (नवा नरोडा)

(२) पटेल ऋुति हिमांशुभाई (सोला-अहमदाबाद)

(३) पटेल काव्या निमेषकुमार (शाहीबाग-अहमदाबाद)

विजेताो का आषाढ शुक्ल गुरु पूर्णिमा ता. १९-७-१६ मंगलवार को श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में प्रात: ८ से ११ बजे तक सभा मंडप में बालको को प.पू. लालजी महाराजश्री के हाथों से तथा बहनो को हवेली में पू. श्रीराजा के हाथों से पुरस्कार दिया जायेगा।

विशेष सूचना : प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से प्रति महिने बालकों के लिये विविधविषयों पर एक पेज अधिक रखा जायेगा।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

विगत अंक में यह लिखा गया था कि किसी भी प्रचार के विना श्री स्वामिनारायण म्जुयिम में दर्शनार्थीयों संख्या प्रतिदिन बढती ही जा रही है। इसके साथ ही आठ नंबर के हाल में स्थापित श्री नरनारायणदेव की महिमा समझकर खूब अभिषेक भी करा रहे हैं। इस जून महीने में करीब १२ जितने अभिषेक हुये हैं। कई बार तो दिन में तीन बार अभिषेक होता है। धीरे-धीरे वर्षाऋतु का प्रवेश हो रहा है। इस समय म्युजियम में भी मौसम खिल उठा है, जिससे यहाँ का वातावरण आहलादक एवं अलौकिक लगता है। आकाश में जब काले बांदल छाते हैं तब म्युजियम का वातावरण और भी मनमोहनक हो जाता है। इसीलिये दर्शनार्थियों के दर्शन की आतुरता बढती जा रही है। कितने हरिभक्त अपने निवास स्थान से चलकर म्युजियम में दर्शन करने के लिये आते हैं। रविवार को सायंकाल ४-०० बजे १२ नंबर होल में प.पू. शा.स्वा. निर्गुणदासजी द्वारा वचनामृत का रसपान कराया जाता है। उसमें भी बड़ी संख्या में भक्त उपस्थित होकर लाभ लेते हैं। यहाँ की केन्टीन में जो भोजन बनता है वह आनेवाले सत्संगियो को ही नहीं अच्छा लगता बल्कि अगल बगल के आवसीय लोग यहाँ टीफिन ले जाते हैं और दर्शन का लाभ भी लेते हैं। इस समय हरिभक्तों के लिये बेकरी की आइटम की भी व्यवस्था की गई है। गेहूं के आंटे की ब्रेड, खारी, बिस्कीट, नानखटाई, भांजी पांउ का ब्रेड, क्रीमरोल के साथ इडली सांभार, खमण-गोटा जैसे नास्ते के आइटम तथा सायंकाल खिचडी-कढी का प्रसाद बनता है। इसके अलावां एकादशी को उपवास के लिये फलाहारी ब्रेड तथा पाउ-भांजी की भी व्यवस्था की गई है। ए सभी वस्तुयें अन्यत्र भी मिलती होंगी लेकिन म्युजियम में प्रसाद के रुप में मात्र टोकन फीस लेकर दिया जाता है। इसके अंलावा शुध्द एवं सात्विक होता है। इसलिये हरिभक्तोके लिये आशीर्वाद रुप साबित हुआ है। इस तरह म्युजियम प्राकृतिक सौन्दर्य तथा शुध्द सात्विक प्रसाद का समन्वय करने वाला दर्शनीय पर्यटक स्थल बन गया है।

– प्रफुल खरसाणी

केवल वोडाफोनवालों के लिये

प.पू. बड़े महाराजश्री के स्ववचनवाली कोलरट्युन मोबाईळ में डाउन लोड करने के लिये अधोनिर्दिष्ट करें।

मोबाईल में टाईप करें : **cf 270930** टाईप करें **56789**

नम्बर पर : **S.M.S.** करने से कोलरट्युन प्रारंभ होगा। नोंट : **cf** टाईप करने के बाद एक स्पेस छोड़कर

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि जून-२०१६

रु। २१,०००/-	अ.नि. श्री मणीलाल लक्ष्मीलाल भालजा साहेब मंडल प्रेरक नंदलालबाई कोठारी कृते जगत किरीटबाई वाधेला - अमदावाद नई गाई लाये उसके निमित्त।
रु। ११,१११/-	डॉ. अरुणभाई देवजीभाई पटेल - कृते राजेशभाई ए. पटेल संकल्प निमित - राणीप।
रु। ११,०००/-	धीरजभाई करशनबाई पटेल - धरमपुर।
रु। ११,०००/-	श्री नरेन्द्रबाई आशारामभाई ठक्कर (सेडलावाला) पिताश्री आशारामभाई के सोलधाम के निमित्ते - अमदावाद।
रु। १०,०००/-	पटेल विजय अरविंदभाई न्यु पटेल साइकल स्टोर्स दहेगाँव
रु। ५,०५१/-	डॉ. निकुंज जी. आरीवाला अर्थ के नज्म के अवसर पर अमदावाद।
रु। ५,००१/-	रमणभाई कुरजीभाी चोडवजीया - हीरावाडी - बापूनगर।
रु। ५,०००/-	हरिकृष्ण एन्टरप्राईझ कृते बचुभाई टेक्सीवाला दरियापुर।
रु। ५,०००/-	प.भ. भगवतभाई एफ. शाग पू. शा.स्वा. हरिकेशवदासजी की प्रेरणा से गांधीनगर।
रु। ५,०००/-	मीनाबहन के. जोषी - बोपल
रु। ५,०००/-	लवजीभाई प्रेमजीभाई सोलंकी - ठक्करनगर।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति के अभिषेक की नामावलि (जून-२०१६)

ता. ०२-०६-२०१६	धीरजभाई प्रवीणभाी हालाई - केन्या
ता. ११-०६-२०१६	डायमेन्ड स्क्रेपकेर - अंकलेश्वर कृते अमृतबाई हीराभाई पटेल (लालोडावाला)
ता. १२-०६-२०१६	अभय गोविंदभाई हीराभाई (पीठवडीवाला) थलतेज
ता. १७-०६-२०१६	महेशभाई लक्ष्मणभाई सोनाणी - बापूनगर
ता. १८-०६-२०१६	श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्युस्टन - यु.एस.ए.
ता. १९-०६-२०१६	(प्रातः) सुजीतकुमार सुरेसभाई पटेल - राणीप
ता. १९-०६-२०१६	(दोपहर) शारदबहन कुबेरभाई पुंजलदास पटेल
ता. १९-०६-२०१६	(सायम) कांतिभाई गोविंदभाई परमार - कालुपुर कृते प्रशांतभाई तता भरतभाई (पैत्र जयकिशन के कक्षा १२ वीं में ९७% प्रतिषत आने के निमित्त)
ता. २५-०६-२०१६	(प्रातः) माधव योगेन्द्रभाई भट्ट - वडोदरा
ता. २५-०६-२०१६	(दोपहर) हरिकृष्णभाई जी. पटेल (डी.आई.जी.) कृते पार्थ तथा बंसरी - यु.एस.ए.
ता. २६-०६-२०१६	निष्मा विरजी हालारिया, निकिता विरजी हालारीया केरा - लंडन।
ता. २९-०६-२०१६	अ.नि. रसिकभाई अंबालाल पटेल (मोखासणवालाः कृते कांताबहन तथा जयेशभाई, संजयबाई (बोस्टन)

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. बड़े महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला २० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा। महाभिषेक लिरवाने के लिए संपर्क कीजिए।

म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६

www.swaminarayanmuseum.org/com • email:swaminarayanmuseum@gmail.com

कला ही भक्ति है

(शास्त्री हरिप्रियदासजी, गांधीनगर)

अपना ज्ञान, कला, विद्या इत्यादि क्यों ? जगत को प्रसन्न करे के लिये, किसी से वाह वाह प्राप्त करने के लिये, या परमात्मा को प्रसन्न करने के लिये ? इस पर विचार करने लायक है। तप करें, उपवास करे, यह सभी श्रीहरि को प्रसन्न करने के लिये है। हम जिस धर्म का पालन करते हैं वह प्रभु को प्रसन्न करने के लिये होना चाहिए। स्वयं साक्षात् परमात्मा मनुष्य के कल्याण हेतु यज्ञ कराते है। सत्कर्म कराते हैं। हम सभी को समझने के लिये, सीखने के लिये शभी उपक्रम करते है। जो भी सत्कर्म करे वह भगवान को प्रसन्न करने के लिये होना चाहिये।

बहुत अच्छी कथा है - नारदजी को एकवार गर्व हो गया। वे महात्मा पुरुष थे । महात्मापुरुष को गर्व नही शोभता । नारदजी को स्वयं की संगीत कला पर गर्व था । वे यही समझते थे कि हम एकमात्र कलाप्रवीण है। मेरे जैसा संसार में कोई नहीं है। मेरे जैसा कोई वीणा बजा ही नही सकता। परमात्मा को विचार हुआ कि नारदजी हमारे है, सच्चे महात्मा है, उनके मन मे यह गर्व शोभा नहीं दे रहा है। इसे निकालना पडेगा। एकवार द्वारका में परमात्मा के सामने सभा हुई, उस सभा में बहुत सारे संगीतज्ञ आये हुए थे । संगीत के बहुत प्रकार होते है। उन सभी के जानकार आये हुए थे। उसी समय नारदजी वहाँ आये और उनके मन में ऐसा संकल्प हुआ कि इन सभी के ऊपर ऐसा प्रभाव डालूं कि धरती के ऊपर मेरी वाह-वाह हो जाय। ठाकुरजी के सिंहासन के बगल में एक वनराज बैठे थे। सभी को ऐसा था कि इस सभा में वानर को क्यो रखा गया है और उसे सिंहासन के पास बैठाया गया है।

नारदजी वीणा बजाना प्रारंभ किये, अनेक प्रकार के रोहा वरोह, ताल, लय से बद्ध वीणा बाद्य प्रारंभ किये। सभा चलायमान हो गई, बड़े-बड़े लोगों के मस्तिष्क डोलने लगे। वाह ! नारदजी, वाह ! नारदजी आपकी क्या कला है ? फिर भी ठाकुरजी उदास बैठे थे। भगवान के मुख पर थोडी भी मुस्कान नहीं थी। नारदजी मुर्झा गये। मैं इतनी सुंदर संगीत बजा रहा हूँ, मेरी इस संगीपर र नाग झूम उठता है लेकिन नारायण क्यों नही डोलते । जितना उन्हें आता था उतना सम्पूर्ण ज्ञान प्रदर्शित कर दिये। पिर भी नारायण के मुख मंडल पर प्रसन्नता नहीं थी। उदासीनता ही थी नारदजी अपनी कला का प्रदर्शन करके ज्यों बैठे त्यौं भगवान के बगल में बैठे हुए वानर राज से भगवानने पूछा कि यह संगीत कैसा लगा ? तब नारदजी को लगा कि यह तो मेरी मजाक हो रही है। मेरे संगीत का अभिप्राय एक बंदर से पूछा जा रहा है. इतने विद्वान बैठे है, संगीत के जानकार बैठे है, उन से प्रभु नहीं पूछते बल्कि एक बन्दर से पूछते हैं। बंदर अभिप्राय देगा ? नारदजी के मन ऐसा हुआ कि प्रभु मेरी मजाक उडा रहे हैं, इस लिये नारदजी ने कहा कि - सभा में बिराजमान अन्य लोग भी हैं उनसे भी पूछ लीजिये।

यह सुनकर भगवानने नारदजी से कहा कि नारदजी ! आप अपनी वीणा इन कपिराज को दे दीजिए न ! अरेरे..... भगवान ! ये तो वानर, मेरी वीणा को तोड़ डालेंगे । भगवान ने कहा की आप दीजिये तो, तोड दैंगे तो हम नई बनवा देंगे। नारदजी ने जैसे-तैसे अपनी वीणा वानरराज को दे दी। वानर राज ने वीणा बजाना प्रारंभ किया। प्रभु के नाम की धुन प्रारंभ किये। सभा में बैठे सभी लोग धीरे धीरे अपने भान को भूल गये। इतना ही नही स्वयं वानरराज भी उसी भाव में खो गए। भगवानने चुटकी बजाई तो धुन समाप्त हो गई। प्रभुने सभी से पूछा कि कपिराज की धून कैसी लगी। पूरी सभा बोल उठी, भगवान ! इस धरती पर

संगीत बजाने वाला ऐसा कोई नहीं है।

प्रभुने कहा, नारदजी ? आप अपनी वीणा लेलीजिये। नारदजी भी प्रशंसा किये, बानर राज मैं ऐसा मानता था कि मैं ही एकमात्र संसार में संगीत कुशल हूँ, लेकिन आप तो हमसे भी आगे है। नारदजी वीणा जब उठाने लगे तो उठी ही नही, इसका कारण यह कि वानरराजने ऐसी वीणा बजाई कि पत्थर पिघल गये और वीणा पत्थर में घुस गई थी, इस लिये वीणा बाहर नही निकल रही थी। अब ऐसी वीणा बजाई जाय कि पत्थर पुनः पिघले और वीणा बाहर निकले, लेकिन नारदजी के पास ऐसी कला नहीं थी । प्रभुने कहा कि, कपिराज ! आप ही वीणा बजाइये । कपिराज के वीणा बजाते ही पत्थर पिघल गये और वीणा बाहर आ गई।

भगवानने कहा कि - नारद ! हमें प्रसन्न करने के लिये यदि धुन की जाय तो पत्थर भी पिघल सकता है। लेकिन जगत को प्रसन्न करने के लिये की जाय तो वह ध्वनि मुझ तक नहीं पहुंचती।

नारदजी को बाद में खबर पडी कि ये कोई सामान्य वानर नहीं है ये तो स्वयं हनुमानजी हैं। वे तो मात्र रामप्रभु को प्रसन्न करने के लिये धुन किये थे । धुन करें, कीर्तन करें, भजन करे, कथा सुने, कथा वांचे, जो भी कुछ करें भगवान के लिये करें, तभी सारी क्रिया सार्थक कही जायेगी। भगवन उस क्रिया को स्वीकार करेंगे । यह वात भगवान स्वामिनारायण ने स्वयं वचनामृत में कही है।

इसके बाद श्रीजी महाराजने कहा कि ''सांभडो एक वात करीये'' त्यारे सर्वे परमहंस गावुं राखीने वात सांभडवा तत्पर थया, पछी श्रीजी महाराज बोल्या ले, मृदंग, सारंगी, सरोदा, ताल इत्यादिक वार्जित्र वजाडीने संगीत कीर्तन गाववां तेने विषे जो भगवाननी स्मृति न रहे तो ए गायुं, ने न गाया जेवुं छे अने भगवानने विसारीने तो जगत मां केठलाल जीव गाय छे, तथा वार्जित्र वजाडे छे। पण तेणे करीने तेना मनमां शांति आवती नथी। ते माटे भगवाननां कीर्तन गाववां तथा नाम रटण करवुं, तथा नारायण रटण धून करवी इत्यादिक जे जे करवुं ते भगवाननी मूर्तिने संभारी ने करवुं।'' (वचनामृत प्र.प्र. २२)

विमुखो से दूर रहना चाहिए

- नारायण वी. जानी (गांधीनगर)

पूर्व के पुण्य से इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण तथा संत-सत्संग की प्राप्ति हुई लेकिन उसे जानने के लिये सतत जागते रहने की जरुरत है। जब बहुत पुण्य होता है तो सत्संग की प्राप्ति होती है, प्रगट इष्टदेव की भक्ति करने का अवसर मिलता है।

''पूर्व ना पुण्य प्रगट थयां ज्यारे
स्वामिनारायण मलिया रे त्यारे .....''

इसमें यदि कोई अव्यवस्थित रहे तो उसका हित नहीं होगा। बहुत सारे जन्मों के पुण्य से प्राप्त सत्संग में से भी कभी पतन हो जाता है। भक्तचिंतामणी के परचा प्रकरण में निष्कुलानंद स्वामीने दीनानाथ भट्ट की वात लिखी है । दीनानाथ भट्ट इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण के अनन्य भक्त थे। संस्कृत के श्लोकों द्वारा भगवान की स्तुति-स्तोत्रों की रचना की है। दीनानाथ भट्ट आमोद के रहने वाले थे। इतनी निष्ठा होते हुये भी वे थोडी भूल के कारण सत्संग में से गिर पडे।

वात ऐसी थी - कि श्री स्वामिनारायण भगवान के पास एक निर्विकल्पानंद स्वामी थे, जिन्हे सत्संग में अभाव आ गया और वे विमुख हो गये । यह लोक वांचकर निर्विकल्पानंद का अभाव नहीं आने दीजियेगा। कारण यह कि जिन्हे साक्षात् भगवान स्वामिनारायण का सानिध्य मिला वह कम वात नहीं है। परंतु निर्विकल्पानंदजीने हमें उदाहरण देने के लिये पर्याप्त हैं। वे खुद सत्संग से गिरे और अपने शिष्यों को भी सत्संग छोडने की वात किये। कितने कमजोर विचार वाले हरिभक्त भी उनके कहने पर निष्ठा से च्युत हुये थे। वही निर्विकल्पानंद एकवार दीनानाथ भट्ट के घर आ गये।

निष्कुलानंद स्वामीने लिखा है -

''एवा समामां आव्यौ, विमुख अति मति मंद,
अभाग जोगे आवी गयो, जे निर्विकल्पानंद ।
एणे भट्ट भरमावियो, आवीयो तेणे अभाव,
पुरण संशय पाडी यो, ए विमुख भजव्यो भाव ॥

दीनानाथ की ऐसी अभाग कि विमुख निर्विकल्पानंद के

पेईज नं. १९

श्री स्वामिनारायण

भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से)
एकादशी सत्संग सभा प्रसंग पर कालुपुर मंदिर हवेली "परमात्मा का शाश्वत प्रेम प्राप्त करता है तो नाशवंत वस्तुओं का परित्याग करना होगा"
(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

श्रीकृष्ण भगवान ने श्रीमद् भगवद् गीता में परमात्मा प्राप्ति के तीन मार्ग बताये है । ''ज्ञानयोग'', ''भक्तियोग'', ''कर्मयोग'', ज्ञानयोग किसके लिए है। जिसका इस संसार में से पूर्ण स्वरुप से वैराग्य आ गया हो उसके लिए ज्ञामानार्ग है, भक्तिमार्ग उनके लिये है जिसकी इस संसार से आशक्ति न रही हो । और कर्मयोग सभी के लिए है । क्योंकि बिना कर्म किए व्यक्ति एक क्षण भी नही रहता । तो कर्म कैसा करना चाहिए ? प्रथम सत्कर्म करना चाहिए । फिर सत्कर्म को निष्काम कर्म में बदलते रहना चाहिए । निष्काम कर्म किसी भी लालच से भरा हुआ नहीं होना चाहिए । समाज में कुछ करने पर मेरा सन्मान बढेगा ऐसा भाव नही होना चाहिए । एक मूर्तिकार इतनी सुंदर मूर्ति बनाता था कि लगता था कि जीवंत मूर्ति है । उसकी मृत्यु का समय आ चुका था । उसने अपनी ही जैसी दस-बारह और मूर्तियाँ बना दी और जब यमराज आये तो उन मूर्तियों के बीच में जाकर छीप गये । यमराज भी सोच में पड गये कि इस में असली कौन है । यमराजने एक उपाय निकाला और बोले इतनी सुंदर मूर्तियां बनायी है कि यदि इन मूर्तियो को बनानेवाला अभी मेरे सामने आ जाय तो मैं उसे वरदान दे दूं । इतना सुनते ही मूर्तिकार तुरतं खडे होकर बोले मैने बनायी है ये सारी मूर्तियाँ ।कहने का तात्पर्य यह है कि यदि थोडा समय करके अहम का त्याग करके धीरजपूर्वक बैठे रहते तो वह बच सकते थे । अपने अंदर को मैं की भावनाने ही वह सब करवाया । इसीलिए अंदर की ऐसी भावना का त्याग करना चाहिए ? भगवान की प्रेरणा से ही सारे कार्य होते हैं । अच्छे संकल्प भगवान की प्रेरणा से ही आते है । और जो कोई खराब कर्म होते है तो वह हमसे अधिक दु:शाहस से कारवा देते है । परमात्मा की आज्ञा का उल्लंघन करने से होता है । जो परमात्मा का शाश्वत प्रेम चाहिए तो संसार की नाशवंत वस्तुओं का त्याग करना चाहिए । काम, क्रोध, लोभ, मान, अहंकार, आदि जो माया के गुण हमारे में है उनका त्याग करना चाहिए । माया भी चाहिए और परमात्मा भी चाहिए ऐसा संभव नहीं है । इस साधारण द्रष्टांत के माध्यम से इसे समझा जा सकता है । कोई भी पुत्री का अपने पिता के घर प्यार से लालन-पालन हुआ हो और बाद में वह अपने ससुराल जाये और उसे अपने पति के घर का सुख चाहिए तो अपने मायके को पीछे छोडना अनिवार्य है । जो मायके को साथ लेकर चलेगी तो मान-सन्मान नही मिलेगा । संसार चलाने के लिये ''माया'' की आवश्यकता पडती ही है । परंतु ''माया'' को भी मर्यादा में रखना चाहिए । ''अति आसक्त'' नहीं होना चाहिए । जिसके भाग्य में जितना है सभी को उतना ही मिलता है । हम किसी के लिए ''समाधान'' कर सकते है प्रयत्न कर सकते है परंतु सब कुछ दे दिया जाय ऐसा संभव नहीं है । किसी माता की संतान को कान से सुनाई ना दे तो वह अपने कान उसे देकर सुनने की क्षमता नही प्रदान कर सकती । प्रारब्धमें जितना होता है उतना ही मिलता है । हम हर प्रकार से दूसरों की जिंदगी सुधार दे ऐसा संभव नहीं है । कुछ लोग अपने अंदर ही कोई बनाने लेते है । स्वयं ही गुनहगार वकील और न्यायाधीश बन जाते है । कुछ चीर्जो का ''न्याय'' करने के लिए हम सक्षम है ही नहीं ।

भगवान स्वामिनारयण जब इस पृथ्वी पर आनेवाले थे तब अश्वत्थामा ने श्राप दिया था कि वह शस्त्र धारण नहीं कर सकेंगा । भगवान इसी कारण शस्त्र धारण नहीं कर सके थे । पंरतु ''शास्त्रो'' को धारण किये । पहेल जो अवसर हुए वे शस्त्र धारण करके बाहय शत्रुओं का संहार किये ।

जब सर्वावतारी श्री भगावन स्वामिनारायण ने शास्त्रो के धारण करके अंदर के अंत:शत्रुओ को विनाश किया है । जब अंत:शत्रुओं का विनाश हो जाने पर बाहरके शत्रुओं का अस्तित्व ही नही रहता । ''ईर्ष्या'', ''मान'', ''क्रोध'', ''लोभ'' सब कुछ का संहार होना चाहिए । प्रत्येक एकादशी

को प्रत्यक्ष ''श्री नरनारायणदेव'' की ''छत्रछाया'' में बैठकर भजन करने को मिलता है । हमारे कीर्तन इतना हो चुके लेकिन हम अभी तक परमात्मा तक नही पहुंच पाये है । हमारे पास पैसे की एक भी नोट आती है तो हम सोचते है कि वह हमारी है । परंतु वही नोट कितनी जगह से धूमकर आती है तब वह उनकी होती है । उसी प्रकार रिश्तेदार जो आज हमारे है कल किसी और के हैं । इसीलिये अति आसक्त नहीं होना चाहिए । कलियुग है । इसीलिए ऐसे बहाने नही निकालने चाहिए कि कलियुग है । परंतु कलियुग में भी गुण छुपे हुए है । इसीलिये महाराजने कहा है कि कलियुग में मात्र नाम स्मरण से ही कल्याण हो जाता है । इसीलिए भक्ति भी करनी चाहिए । अंत:शत्रुओं को जीतने के लिए परमात्मा के बताये हुए मार्ग पर आगे बढना चाहिए ।

●

श्रध्धा

– सां.यो. कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

भगवत् प्राप्ति के लिये सर्वोत्तम शाधक है तो वह है मात्र निर्मल श्रध्धा तथा शुद्ध भावना । व्यास भगवानने ब्रह्मसूत्र में कहा है कि ''तर्कान अप्रतिमानात्'' श्रद्दा के मार्ग में तर्क का कोई स्थान नहीं है । तर्कवाला व्यक्ति कभी निर्मल श्रद्धा नही प्राप्त कर सकता ।

पुरानी एक कथा है कि काशी में विद्या भ्यास करके आया हुआ ब्राहमण तर्कपर चढ गया ''घृतं पात्रा धारेवा पात्रं घृताधारम्'' घृत पात्र का आधार है या पात्रघी का आधार है इसका निर्णय करने के लिए घी को उल्टा कियेतो घी गिर गया । इसी तरह हम भी तर्कवाद पर चले जायेंगे तो श्रद्धा का पात्र उल्टा हो जायेगा । इसका मतलब भगवान की प्राप्ति में सर्वोत्तम साधन श्रद्धा है ।

संसार के बंधन से छूटने का सरल साधन श्रद्धा है । किसी की कार्य में पूर्ण सिद्धि प्राप्त करने का मुख्य साधन श्रद्धा है । कोई भी कठिन काम श्रध्धा से सरल होजाता है । यदि बुद्धि संसारवाली हो, श्रद्धा के विना हो अस्थिर हो तो शांति नहीं मिल सकती । स्थिरता श्रद्धा से मिलती है । पुराने जमाने में एक अबोधवाला को विवाह मंडप में एक अन्जाने पुरुष के हाथ में दिया जाता था । फिर भी यह मेरा पति है, इसकी हमें सेवा करनी है, ऐसी भावना होने से संसार सुखमय हो जाता था, दाम्पत्यजीवन धन्य हो जाता था । इसी तरह भगवत् प्राप्ति के लिये इसी तरह के श्रद्धा की जरुरत है ।

शास्त्र में कहा है कि –

श्रद्धा बाध्यते बुद्धि, श्रद्धा सुध्धते मन: ।
श्रद्धाया: प्राप्य ते ब्रह्म, श्रद्दा पाप विनाशीनी ॥

श्रद्धा से बुद्धिमें यथार्थ ज्ञान की उत्पति होती है । श्रद्धा से मन शुद्ध होता है । श्रद्धा सभी के पाप को नास करने वाली है । साक्षात् परमात्मा की प्राप्ति भी श्रद्धा से ही होती है । श्रद्धाहीन मनुष्य की मोक्षकारक साधनो में प्रवृत्ति नही होती है ।

आज के विज्ञानयुग में तर्कवाद तथा बुद्धिवाद में वृद्धि हो गयी है । नयी पीढी के युवको और युवतिओं में इस तर्कवाद तथा बुद्धिवाद प्रधानरुप में ज्यादा है । इसीलिए ज्यादातर युक और युवतीयों श्रद्धा का स्वरुप नहीं समझ सकते । गीता में श्रीकृष्ण भगवानने कहा है कि श्रद्धावान पुरुष को तत्काल अध्यात्मज्ञान की प्राप्ती होती है । श्रद्धा रहित तथा संहाल वाले पुरुष मोक्षमार्ग से भ्रष्ट हो जाते है । श्रद्धाहीन मनुष्य की मोक्षके साधनो में प्रवृत्ति नही होती ।

श्रद्धा का अर्थ है विश्वास ऐसा सामान्य अर्थ किया जा सकता है । परंतु विश्वास तथा श्रद्धादोनो ही शब्दो का प्रयोग भिन्न-भिन्न अर्थ में किया गया है । दूसरो की कही बात को सत्य मानना विश्वास कहलाता है और दूसरों की कही बातों को अमल में लाना श्रद्धा है । विश्वास से संशय समाप्त होता है । और श्रद्धासे विचार पवित्र होता है । इसीलिए उसे श्रेष्ठ भक्त करते है । श्रद्धा से ही सभी कार्य सिद्ध होते है । श्रद्धा से ही धर्म की वृद्धि तथा कार्य की सिद्धि होती है । श्रद्धा माता स्वरुप है । श्रद्धा माता की तरह धर्म की वृत्ति- पोषण अपने बालक की करती है । श्रद्धाविहीन व्यक्ति की मोक्षकारक साधनो में प्रवृत्ति नहीं होती । श्रद्धाके अभाव में पूजा-सेवा-जप-परिक्रमा का कोई भी फल प्राप्त नहीं होता । श्रद्धावान मनुष्य जो चाहे वह कर सकता है ।

उत्तर गुजरात में ऊँझा नामका गाँव है । उस गाँव में जेकुवंरबाई नामक एक सत्संगी बहन थी । श्रीजी महाराज उनके घर दिव्य स्वरुप पधारे थे ।उस समय बहन रसोई बना रथी है । इसीलिये महाराज बाहर आंगन में ही बैठे रहे । कुछ समय बाद जेकुंवरबाई बाहर आई . महाराज को देखकर परेशान हो गयी । फिर प्रसन्न भी हुई । महाराजने पूछा रोज

आपको भोजन बनाने में इतनी देर होती है। तब जेकुंवरबाईने उत्तर दिया, 'हे महाराज भजन तो कम ही करती हूँ, अब आप जैसा बोले वैसा आगे से करुंगी ''तब महाराजने कहा की कलसे आप कम भोजन करेगी भोजन नही बनायेगी। और अधिक भोजन ग्रहण नही करेगी। जेकुंवरबाई रोज कम भोजन करने लगी। फिर भी आध्यात्मिक सत्कर्म में आरंभ से ही सिद्धि हेतु वस्तुओं की आवश्यकता है। (१) प्रीती (२) विश्वास (३) श्रद्धा जेकुंवरबाई में तीनो चीजे थीं। श्रीजी महाराज पर बहुत विश्वास था। श्रीजी महाराज पर उनको इतना अटूट विश्वास था कि उन्होंने भोजन का त्याग करने को कहा था तो उसे पूरे विश्वास से निभाया। इसी प्रकार विश्वास तो हो गया परंतु अभी श्रद्धा नहीं आयी थी। दूसरे दिन वचन को आचरण में लाकर उसे कियात्मक बना दिया। इस प्रकार श्रद्धा भी आ गयी। उसी प्रकार जेकुंवरबाई को श्रीजी महराज के वचनो में श्रद्धा थी तो पूरा जीवन एक समय लाकर रहने लगी। कारीयाणी में तालाब खोदाई के समय श्रीजी महाराज एक मन अनाज अपने हाथो से पीसने की सेवा करते थे। आंटे की रोटी बनाकर सभी को खिलाते। ऐसी श्रद्धा प्रेमभाव, भक्तिभाव ऐसा उत्साह संतो में भी था। इसीलिए जीवन में सदैव श्रद्धा होनी ही चाहिए। श्रद्धा कच्ची सूतके धागे के समान होती है। तुरंत टूट सकती है। इसीलिए श्रद्धा भी अटूट होनी चाहिए। तभी तणे साक्षात् महाराज दर्शन देने को पधारेगे।

शबरी की तीव्र श्रद्धा से ही और सती पार्वतीजी की श्रद्धा से ही भगवानने दर्शन दिये थे। इसीलिए जीवन में श्रद्धा सदैव होनी चाहिए। पूर्ण श्रद्धा से ही कर्मका फल दुगुना मिल सकता है। श्रद्धा होगी तो ही अंत समय में भक्त की इच्छानुसार भगवान को आना ही पडता है।

हरिभक्त कहते है कि, कला भगत को अंतकाल में महाप्रभु माणकी घोडी पर बैठकर लेने आये थे। वैष्णवोने कहा है कि भक्त को भगवान के पार्षद, वैकुंठ में ले जाते है। उसी प्रकार श्रद्धा हो तो अंत समय में भगवान को आना ही पडता है। इसीलिए भगवान की प्राप्ति की एकमात्र उपाय श्रद्धा है। भगवान हठसे नही मिलते। श्रद्धा से ही भगवान संतुष्ट होते है।

अनु. पेईज नं. १६ से आगे

घर आ पहुंचे। अब ध्यान से बांचियेगा कि भूल कहाँ होती है। भट्टजी तो उनका आगता स्वागता किये और निर्विकल्पानंद उनकी पद्धती स्वीकार कर लिये। महाराज के विषय में अभाव आवे ऐसी वातचालू कर दिये। भट्टजी वे सारी वाते सुनना चालू कर दिये। विमुख के मुख से निकलते शब्द भट्टजी के निश्चय वाले मन पर असर करने लगे। जिसके प्रतिइतनी निष्ठा थी उनकी प्रति विरति हो गयी। विमुख अपना काम करके चले गये। विचार आता है ? इसमें भट्टजी की भूल कहा हुई ? यह वात मानी जा सकती है कि यह संत विमुख हो गये है तो इनका आगता स्वागता करनी चाहिए। स्वागत करना तो व्यवहारिक बात है। लेकिन भूल यहाँ हुई जब निर्विकल्पानंद महाराज के विषय में खराब प्रस्तुतीकरण हो रहा था और भट्ट का मन विचलित हो रहा था। भट्टजी उन्हों रोके नही और सुनते ही रहे, उन्हें घर में से बाहर नहीं निकाले। परिणाम ऐसा हुआ कि बहुत जन्मों के पुण्य के बाद जो सत्संग मिला था वह खत्म हो गया और वे महाराज के दर्शन करना भी बन्द कर दिये।

प्रिय मित्रो ! बाद में भट्टजी सत्संग में वापस आ गये। लेकिन हम यदि सावधान नहीं रहेंगे तो हमारा क्या होगा ? प्रेमानंद स्वामीने हम सभी की भूल वैसे न हो जाय उसे रोकने का संदेश दिया है। इसलिये प्रतिदिन सायं प्रात: में ११ नियम के पद ''निर्विकल्प उत्तम अति '' इस पद में में लिखा है कि ''विमुख जीव के वदन से कथा सुनी नहिं जात''। कभी अपने इष्ट देवका, सत्संग का, शास्त्र का खराब बोलता हो तो वह वात सुननी नहीं चाहिये, वहाँ से हट जाना चाहिये। वह जीव का नाश करने वाली है।

इसलिये सावधानी पूर्वक करोडो जन्म के पुण्य से प्राप्त इस सत्संग के रहस्य को अवश्य समझना चाहिए। भगवान को प्रतिदिन ऐसी प्रार्थना करनी चाहिए कि हे महाराज ! हमे कभी विमुख का सत्संग नही देना।

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में श्रीहरि अन्तर्धान तिथि

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा कालुपुर मंदिर के महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी के मार्गदर्शन में श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में ज्येष्ठ शुक्ल-१० को प्रसादी के सभामंडप में प्रातः ८-३० बजे से १०-०० बजे तक सर्वोपरि श्रीहरि के अन्तर्ध्यान तिथि के निमित्त शा.स्वा. विश्वविहारीदासजीने कथा की थी । सभी संत हरिभक्त समूह में धुन किये ते । को.सा. नारायणमुनि स्वामीने सुंदर व्यवस्था की थी। (योगी स्वामी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट श्री घनश्याम महाराज का अलौकिक चंदन चर्चित दर्शन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. स्वा. देवप्रकाशदासजी की प्रेरणा से यहां नारायणघाट श्री स्वामिनरायण मंदिर में विराजमान सर्वोपरि श्री घनश्याम महाराज का वैशाख शुक्ल-३ से ज्येष्ठ कृष्ण-१ तक मलयागिरि चन्दन से चर्चित करके स्वामी दिव्यप्रकाशधासजी तथा विश्वस्वरुपदासजी (मूली) प्रतिदिन प्रातः हरिभक्तों को दर्शन करवाते थे । कितने हरिभक्त यजमान बनकर इसका लाभ लिये थे । ज्येष्ठ कृष्ण-१ को ठाकुरजी को केशर स्नान कराकर पू र्णाहुति की गई थी । जिसके यजमान प.भ. गं.स्व. सूर्याबहन गिरीशबाई पटेल (सायन्ससीटी) कृते निमिषबाई तथा केतनबाई इत्यादि परिवारने लाभ लिया था । केशर स्नान के प्रसंग पर आरती स.गु. शा.स्वा. हरिकृष्णदासजीने की थी । इस प्रसंग पर कोठारी बालस्वरुप स्वामीने प्रेरणात्मक सेवा की थी । चन्दन घिसने की सेवा प.भ. नटुभाई पटेल बरसों से करते हैं । फूलों के श्रृंगार की सेवा फूल मंडली द्वारा की गई थी । इन सभी की सेवा प्रेरणारुप थी ।

(दशरथभाई पटेल - नारायणघाट मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर (आर.सी. टेक्नीकल रोड) घाटलोडीया में रात्रि श्रीमद् सत्संगिजीवन सप्ताह पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. महंत छोटे पी.पी. स्वामी (गांधीनगर से-२) की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर घाटोलडीया द्वारा आयोजित परम कृपालु श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में ता. २३-५-१६ से ता. २९-५-१६ तक रात्रि में ८ से ११ बजे तक संप्रदाय के सुप्रसिद्ध कथाकार शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) ने अपनी सुमधुर शैली में श्रीमद् सत्संगीजीवन की कथा की थी।

इसके साथ ही मानव सेवा के रुप में आर्थोपेडिक, डेन्टल आंख तथा गायनेक, ब्डल इत्यादि का निदान केम्प निःशुल्क रखा गया था ।

इस कथा के मुख्य यजमान प.भ. गं.स्व. कांताबहन प्रहलादभाई पटेल तथा अ.नि. मधुबहन (डांगरवावाला) परिवारने अलौकिक लाभ लिया था । अन्य छोटी-बडी सेवा में बरुत सारे भक्त लाभ लिये थे । इस तरह के आयोजन से इस विस्तार में श्री नरनारयणदेव के बहुत सारे आश्रित भी बने है । यही कथा का मूल हेतु था । (रमेशभाई पी. पटेल)

हर्षदकोलोनी श्री स्वामिनारायण मंदिर छठ्ठा वार्षिक पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.भ. दासभाई की प्रेरणा से हर्षद कोलोनी मंदिर के छठ्ठे पाटोत्सव केनिमित ता. १६-५-१६ से ता. २२-५-१६ तक शा.स्वा. निर्गुणदासजी के वक्तापद पर श्रीमद् सत्संगिजीवन की कथा संपन्न हुई थी । ४५° से ४८° डीग्री के तापमान में भी श्रोतालोग एक चित्त से कथा श्रवण किये । कथा में आने वाले एक चित से कथा श्रवण किये । कथा में आनेवाले सभी उत्सव यथाक्रम मानाये गये थे । जिस में श्री घनश्याम जन्मोत्सव गादी अभिषेक, श्री नरनारायणदेव प्रतिष्ठा महोत्सव बड़ी दिव्यता से मनाये गये थे ।

समूह महापूज में १७० यजमान भाग लिये थे । इस प्रसंग पर बहनों को आशीर्वाद देने के लिये प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी पधारी थी । कालुपुर मंदिर से पू. महंत स्वामी संत मंडल के साथ पधारे थे । एप्रोच मंदिर के संत भी पधारे

थे।

ठाकुरजी का भव्य अन्नकूटोत्सव किया गया था । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का कथा श्रवण करके मुख्य यमजान प.भ. विनोदभाई (मेमनगर) तथा डॉ. कौशल पटेल को साथ रखकर कथा की पूर्णाहुति करके सभा में सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे ।

(गोरधनभाई वी. सीतापरा)

हर्षदकोलोनी बहनों के मंदिर में १२ धन्टे की महामंत्र धून

प.पू.अ.सौ. गादीवालजी की आज्ञा से यहाँ की मंदिर की पुजारी प.भ. चंपाबहन की प्रेरणा से ज्येष्ठ शुक्ल-१० को सर्वावतारी श्रीहरि के अन्तर्धान की तिथि के निमित्त प्रात: ७-०० बजे से सायंकाल ७-०० बजे तक १२ धन्टे की अखंड धुन रखी गई थी । तथा एप्रोच मंदिर (बहनो के) ३ धन्टे तक तथा भाईयों के मंदिर में ढाई धन्टे की धुन की गई थी ।

(गोरधनभाई वी. सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर न्यु राणीप तीसरा पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से न्यु राणीप का तीसरा पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया था । सर्व प्रथम संतोने ठाकुरजी का अभिषेक किया बाद में प.पू.ध.धु आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों पूजन अर्चन तथा अन्नकूट की आरती की गई थी । इस प्रसंग पर महंत देवप्रकाशदासजी (नारायणघाट) महंत नाना पी.पी. स्वामी (गांधीनगर) को. जे. स्वामी, सिद्धेश्वर स्वामी इत्यादि संत पधारे थे । शा. दिव्यप्रकाशदासजी तथा कुंजविहारी स्वामीने हरिभक्तों को सुंदर कथा श्रवण का लाभ दिया था । प.पू.ध.दु. आचार्य महाराजश्री ने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णकृष्णदासजीने होमात्मक महापूजा की पूर्णाहुति आरती उतारकर आशीर्वाद दिये थे । सत्संगियो तथा युवक मंडल द्वारा सुंदर आयोजन किया गया था ।

(ब्रिजेशभाई पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर महादेवनगर (जडेश्वरपार्क) २१ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण महादेवनगर (झडेश्वरपार्क) का २१ वाँ पाटोत्सव संतो की शुभ उपस्थिति में धूमधाम से मनाया गया।

इस प्रसंग का यजमान परिवारने अभिषेक का सुंद रलाभ लिया था । ३ धन्टे तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र की अकंड धुन की गई थी । ठाकुरजी को छप्पन भोग लगाकर संतोने आरती की थी ।

अलौकिक सभा में पू. महंत स्वा. हरिकृष्णदासजीने स्वा. आनंदप्रियदासजी, स्वा. भक्तिहरिदासजी, स्वा. सिध्धेस्वरदासजी, स्वा. नीलकंठदासजी इत्यादि संतोने उपदेशात्मक प्रवचन किया ता । युवान भाईयो तता बहनो ने सुंदर व्यवस्था की थी । समग्र आयोजन स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी की प्रेरणा से संपन्न हुआ था ।(को. श्री स्वा. मंदिर झडेश्वरपार्क)

सोनरडा (दहेगाँव) में भव्य खिचडी उत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवं सोनरडा गाँव के सभी भक्तों के सहयोग से तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा आयोजित भव्य खिडजी उत्सव ता. ११-६-१६ को धूमधाम से मनाया गया था ।

जिस में शा.पी.पी. स्वामी (छोटे) सिद्धेश्वर स्वामी शा. नारायणमुनि, शा. कुंजविहारी स्वाम,ी चैतन्य स्वामी इत्यादि संत मंडलने ठाकुरजी के समक्ष खिचडी बघार कर भक्तों को दर्शन का लाभ दिया था । १८ जितने गाँवो के ८०० जितने भक्त कथा का रसपान करके खिचडी का प्रसाद ग्रहण करके धन्य हो गये । समग्र आयोजन स.गु. शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदसाजीने युवक मंड के साथ सहकार से किया था। (प्रदीप श्री न.ना.देव युवक मंडल - सोनारडा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर से-२ पंचान्ह रात्रि धीरजाख्यान कथा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा यहाँ मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा आयोजित ता. १-६-१६ से ता. ५-६-१६ तक स.गु. निष्कुलानंद स्वामी द्वारा विरचित धीरजाख्यान की कथा शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपने की थी । यह कथा रात्रि में तीन दिन की थी । पारायण का सम्पूर्ण खर्च श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तरफ से किया गया था । कथा का लाभ गांधीनगर तथा अगल बगल के गाँव के रहनेवाले हरिभक्तों ने लिया था । अनेक धाम से संत पधारे थे ।

कथा की पूर्णाहुति के अवसर पर कालुपुर मंदिर के महंत स्वामी शा. हरिकृष्णदासजी तथा धोलेश्वर महादेव के महंत डी पू. रामस्वरुपुरीजी एवं पू. देव स्वामी, सिद्धेश्वर स्वामी कुंजविहारी स्वामी, परमहंस स्वामी इत्यादि संत पधारकर सभा में भक्तों को आशीर्वाद दिये थे। सर्वोपरि श्री घनश्याम महाराज के सन्मुख हजारों भक्तों ने कथा का श्रवण करके अपने को धन्य समझा। आगामी वर्ष की कथा के यजमान की भी धोषणा कर दी गई।

(दिनेश श्री न.ना.देव युवक मंडल गांधीनगर से-२)

नवनिर्मित श्री स्वामिनारायण मंदिर सोलैया (माणसा)

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से कोगुलगाँव सोलैया में स.गु. पूज्. शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुरधाम) के पावन सानिध्य में जिस भूमि पर मंदिर निर्माण का कार्य चल रहा है वहाँ पर एक सत्संग सभा का आयोजन किया गया था। सभा में सुदामा ने दो मुठ्ठी चिउडा देने के लिये ४० वर्ष तक विचार करते रहे, इस विषय पर मननीय प्रवचन किये थे। इसके साथ शासत्री धर्मकिसोरदासजीने ''आया राम गया राम'' इस दृष्टांत से उपदेशात्मक वात की थी। श्री नरनारायणदेव युवक मंडल बालवा ने सुंदर कीर्तन-भजन का लाभ लिया था। अंतिम में मंदिर निर्माण के प्रमुखश्री नारायणभाई चौधरीने तन-मन-धन से सेवा करने का निवेदन किया था, साथ में जिनकी सेवा अभी बाकी है वे अपनी राशी जल्दी जमा करादें। इस तरह निवेदन किया थआ। (को.श्री पोपटबाई तथा श्री न.ना.देव युवक मंडल बालवा)

देवीदत्तपुरा (लिंबोदरा) में श्रीमद् भागवत पंचदिनातमक रात्रि पारायण

श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवं जेतलपुरधाम के महंत शा. स्वा. आत्मप्रकाधासजी तथा शा.स्वा. पू. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन में देवीदत्तपुरा (लिंबोदरा) गाँव में श्रीमद् भागवत पंचदिनात्कम रात्रि पारायण शास्त्री हरिकृष्दासजी के (एप्रोच-बापुनगर) वक्तापद पर संपन्न हुई, जिसमें प्रलाद चरित्र, ध्रव चरित्र, जडभरत आख्यान श्रीकृष्णजन्मोत्सवं, रासक्रीडा इत्यादि उत्सव बड़ी दीव्यता से मनाया गाय था। प्रासंगिक सबा में पोथीयात्रा के यमजान श्री अशोकभाई वी. चौधरी (डेरी के मंत्री) तथा रात्रि प्रसाद के यजमान - संजयभाई, हरेशबाई, प्रहलादभाई, कनुभाई, भरतभाई (मंडप) भीखाभाई (पानी के यजमान) का सन्मान किया गया था। इस प्रसंग पर बापुनगर एप्रोच मंदिर से वयोवृद्ध संत लक्ष्णजीवनदासजी तथा उनके संत मंडल एवं बावला, उनावा, पेथापुर के संतो को धोती ओढाकर सन्मान किया गया था। इसके यजमान चौधरी जेसंगभाई थे। इस सम्पूर्ण कार्यक्रम में देवीदत्तपुरा श्री नानबाई युवक मंडलने प्रेरणारुप सेवा की थी।

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी की आज्ञा से श्री नरनारायणदेव महिला मंडल पूर्णाहुति के प्रसंग पर प्रसाद के यजमान पद का लाळ लेकर धन्य हो गई। देवीदत्तपुरा तथा अगल बगल के गाँवो से आकर भक्त बड़ी संख्या में कथा का लाभ लिये थे।(सत्संग समाज की तरफ से अशोकभाई)

रामपुरा (आमजा) गाँव में श्रीमद् भागवत दशम स्कंधत्रिदिनातमक रात्रि पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी (जेतलपुर मंदिर महंत) तथा स.गु.शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के मार्ग दर्शन में रामपुरा गांवमें श्रीमद् भागवत दशम स्कंद रात्रि ज्ञानयज्ञ पुराणी स्वामी ध्यानप्रियदासजी के (वणजर स्वामिनारायण मंदिर) वक्तापद पर संपन्न हुई, जिसमें माखन लीला, पूतना चरित्र, गोवर्धन चरित्र, श्रीकृष्णजन्मोत्व खूब आन्द के साथ मनाया गया था। समग्र रात्रिपारायण में सेवा करने वाले यजमानो में पोथीयात्राके यजमान कालाभाई तथा प्रसाद-पानी के यजमान श्री निमेष बलदेवभाई चौधरी तथा अश्विनभाई, कनुभाई, प्रहलादभाई वेलजीभाई, जेसंगभाई का शाल ओढाकर सन्मान किया गाय था। इस प्रसंग पर बापूनगर, उनावा से पधारे हुये संतो को धोती ओढाकर सनमान किया गया था। जिसके यजमान श्री गोपालभाई थे। इस कथा में अगल बगल के गाँवो से बडी संख्या में भक्त आकर लाभ लिये थे। समग्र कार्यक्रम में श्री रामेश्वर युवक मंडल ने प्रेरणात्मक सेवा की थी।

(श्रीरामपुरा (आमजा) सत्संग समाज)

राठोड वासणा में एक दिवसीय सत्संग सभा

भगवान स्वामिनारायण की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से बालवा गाँव के युवक मंडल द्वारा अनादि मुक्तराज जेराम ब्रह्मचारी जिनका भगवान के साथ गहरा संबंधथा । सेवा भावी जेराम ब्रह्मचारी के पूर्वाश्रम का जन्म स्थान राठोड वासणा गाँव में सुंदर सत्संग सभा का आयोनज किया गया था । श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच के महंत स्वामी लक्ष्मणजीवनदासजी के संत मंडलने कथा वार्ता का लाभ दिया था। जेराम ब्रह्मचारी के छटे वंशज विजयभाई रतीभाई पंड्या के घर इस सत्संग सभा का आयोजन किया गया था।

(श्री नारायणभाई चौधरी - बालवा सत्संग समाज)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मेडा (खारवरीया) श्रीमद् सत्संगिजीवन सप्ताह पारायण

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से खाखरिया देश के मेडा गाँव में ता. २१-५-१६ से ता. २७-५-१६ तक श्रीमद् सत्संगिजीवन सप्ताह पारायण स्वा. हरिकृष्णदासज (एप्रोच-बापूनगर) के वक्तापद पर श्रीहरिलीलाचरित्र के साथ सत्संगियों को सच्चाज्ञान दिया गया था।

कथा के बाद वक्ता संतने प्रत्येक युवानो को व्यसन छोडने की वात तथा नित्यसत्संग में आनेकी वात कही थी। मेडा गाँव में यह सुंदर आयोजन किया गया था। छोटे-बड़े सभी हरिभक्त तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल ने प्रेरणारुप सेवा की थी। जो सभी के ऊपर परमकृपालु श्री नरनारायणदेव तता धर्मकुल की अहरनिश प्रसन्नता बनी रहे एसी प्रार्थना। कथा पूर्णाहुति के अवसर पर समस्त ग्रामजनो ने समूह प्रसाद ग्रहण करके धन्यता का अनुभव किये थे

(मेडा गाँव सत्संग समजा की तरफ से चेतन जे. पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर पेथापुर १२ वां वार्षिक पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा संतो की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर पेथापुर का १२ वाँ पाटोत्सव ता. २३-५-१६ को धूमधाम से मनाया गया । ठाकुरजी का षोडशोचपचार अभिषेक विधिपूर्वक सम्पन्न हुआ।

प.पू. लालजी महाराजश्री के शुभ सानिध्य में प्रासंगिक सभा की गई । जिस के यजमान परिवारने प.पू. लालजी महाराजश्री का पूजन अर्चन करके आरती की।

प.पू. लालजी महाराजश्रीने संतो हरिभक्तो को आशईर्वाद देते हुए कहा कि, ''सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवानने अहमदाबाद मंदिर में स्थापित की हुई श्री नरनारायणदेव की मूर्तिओ में अटूट श्रध्धा रखना ।यहाँ के सत्संग में उत्तरोत्तर प्रगति हेतु आशीर्वाद दिये।

सेवा करनेवाले यजमान में पेथापुर गाँव तथा बालवा तथा कणभा गाँव ने भाग लिया तथा ठाकुरजी का स्वरुप, खेस, माला तथा शास्त्र भेट स्वरुप दिये । उसके बाद ठाकुरजी की अन्नकूट आरती थी । इस प्रसंग पर स.गु. निष्कुलानंद स्वामी कृत पुरुषोत्तमप्रकाश ग्रंथ की त्रिदिनात्मक कथा स.गु. महंत शा.स्वा. धर्मप्रवर्तदासजीने की। समग्र आयोजन महंत स्वामी धर्मप्रवर्तकदासजी किया। मंदिर में बिराजमान ठाकुरजी को वैशाख शुक्ल पक्ष-३ से ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष-१५ तक सुंदर अलौकिक चंदन के वस्त्रो के दर्शन फुलो के वस्त्रो के दर्शन पू. स्वामी घनश्यामदासजीने करवाये। (कोठारी मुकुन्दबाई वी. परमार)

श्री स्वामिनारायण मंदिर अरोरा १० वाँ वार्थिक पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से इडर मंदिर के महंत स.गु. स्वा. जगदीशप्रसाददासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर अरोरा का १० वाँ पाटोत्सव ता. ११-५-१६ को प.भ. कनुभाई एम. पटेल तथा जीतेन्द्रकुमार एम. पटेल के यजमान पद पर धूमधाम से मनाया गया।

पाटोत्सव के उपलक्ष में षोडशोपचार महापूजा संतोने की। तता साधु विश्ववल्लभदास तथा शा. अजयप्रकाशदासने हरिभक्तों को महाराज के लीला चरित्रो की कथा कही। ईडर मंदिर के कोठारी एस.एस. स्वामी तथा रामचंद्र भगत ने सुंदर व्यवस्था की। (पिन्टु भगत)

श्री स्वामिनारायण मंदिर ईडर १७० वाँ वार्षिक पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा ईडर मंदिर के मंहत स.गु. स्वा. जगदीशप्रसाददासजी की प्रेरणा-मार्गदर्शन से मंदिर में बिराजमान महाप्रतापी श्री गोपीनाथजी हरिकृष्ण महारजा तथा श्री सूर्यनारायणदेव का १७० वाँ वार्षिक पाटोत्सव ता. १८-६-१६ को प.भ. भक्तिभाई गोकलभाई पटेल (नेत्रामली) परिवार के यजमान पद पर धूमधाम से सम्पन्न हुआ।

प.पू.धु.धु. आचार्य महराजश्री के वरद् हाथों से ठाकुरजी की अन्नकूट आरती तथा शिंगार आरती हुई।

प्रासंगिक सभा में संतो में पू. शा.स्वा. हरिकेशवदासजी स्वामी (गांधीनगर) तथा अहमदाबाद, सोकली, टोरडा, नारायणघाट, राओल, वडनगर, खाण, श्रीनाथजी आदि संत गण पधारे थे।

अंत में प.पू.ध.दु. आचार्य महाराजश्रीने सभी संतो हरिभक्तो को आशीर्वाद दिये। इडर तथा आसपास के गाँवो में से भक्तोने दर्शन का लाभ लिया।

समग्र प्रसंग में कोठारी सत्यसंकल्प स्वामी, अजय स्वामी तथा श्रीजीप्रकाश स्वामीने सुंदर आयोजन किया।

(पिन्टु भगत)

मारुसणा तथा देवत्रोज श्री स्वामिनारायण मंदिर का पाटोत्सव मनाया गया

सर्वोपरी श्री स्वामिनारायण की पूर्ण कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से, ईडर मंदिर के मंहत स.गु. स्वामी जगदीशप्रदासदासजी की प्रेरणा से मारुसणा गाँव के श्री स्वामिनारा?ण मंदिर का ९८ वाँ वार्षिक पाटोत्सव प.भ. मनीभाई मगनभाई पटेल के यजमान पद पर धूमधाम से मनाया गया।

समग्र प्रसंग में स.गु. स्वामी रघुवीरचरणदासजी (सोकली) कोठारी सत्यसंकल्पदासजी, श्रीजी स्वामी तथा अजय स्वामी ने हरिभक्तो को प्रेरणात्मक उपदेश श्रीहरि की वार्ता आदि कार्यक्रम किये।

उसी प्रकार देत्रोज श्री स्वामिनारायण मंदिर में विराजमान ठाकुरजी का पाटोत्सव प.भ. भरतभाई भावसार तथा गांव के समस्त हरिभक्तों ने धूमधाम से मनाया।

(कोठारीश्री मारुसणा - देत्रोज)

भीमपुरा (घांटु) गाँव में धीरजाख्यान कथा

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण सत्संग समाज भीमपुरा विजापुर में प्रथमवार स.गु. निष्कुलानंद स्वामी रचित धीरजाख्यान रात्रि कथा शा.स्वा. कुंजविहारीदासजी तता शा.स्वा. दिव्यप्रकाशदासजी (नारायणघाट) के वक्तापद पर सुमधुर शैलीने संगीत के साथ धूमधाम से की गयी। यहाँ सिर्फ १५ घरो में सत्संग है। तो भी सुंदर भव्य आयोजन ग्रामजनो ने किया। इस प्रसंग पर स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी (कालुपुर), स.गु. महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी (नारायणघाट) दोनोने आगेवान हरिभक्तो को बुलाकर मंदरि निर्माण का संकल्प करवाया। इस संकल्प में पूर्णाहुति समय पर प.पू. लालजी महाराजश्रीने इसकी धोषणा की। प.पू. लालजी महाराजश्री ने अपने आशीर्वाद में आशीर्वाद दिये की यहाँ सुंदर मंदिर का निर्माण होगा तथा यहाँ के सत्संग में उत्तरोत्तर वृद्धि होगी। वडनगर से स.गु. शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी, गांधीनगर से महंत शा.पी.पी. स्वामी आदि संतोने भी सुंदर उपदेशात्मक बाते कही, इस प्रसंग पर अहमदाबाद, मूली, ईडर, नारायणघाट, प्रांतिज के संतगण पधारे छे भक्तोने कथा श्रवण करके धन्यता का अनुभव किया। (कनुभाई पटेल - भीमपुरा घांटु)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नये वणझर में श्रीमद् सप्ताह कथा का आयोजन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पूजारी स्वामी ध्यानप्रियदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर वणझर में ता. ३०-५-१६ से ५-६-१६ तक श्रीमद् भागवत सप्ताह कथा स.गु. स्वामी ध्यानप्रियदासजी के वक्तापद पर समाप्त हुई।

इस प्रसंग पर वासणा, अंजली, गांधीनगर, बावला, पेथापुर, बोपल तथा कालुपुर मंदिर के संतोने पधारकर

आशीर्वाद दिये।

कथा के यजमान प.भ. जेठाभाई कांतिभाई पटेल तथा प.भ. ललीतभाई जे. ठक्कर, ह. राजुभाई ठक्कर का परिवार था।

समग्र प्रसंग में सभा संचालन पू. संतस्वरुप स्वामीने किया। युवक मंडल तता महिला मडल की सेवा प्रेरणारुप थी। (कोठारी रमणभाई तथा वणझर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर आयोजन सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा गांधीगनर से-२ मंदिर के मंहत शा. छोटे पी.पी. स्वामी के आयोजन से श्री स्वामिनारायण मंदिर के आजोल में ता. २१-५-१६ से न्यु पाटीदार संकुल में सुंदर सत्संग सभा का आयोजन किया गाय। जिस में शा. चैतन्य स्वामी, सिध्धेश्वर स्वामी आदि संतोने ८०० जितने श्रद्धालु, भक्तोंने सर्वोपरी श्री स्वामिनारायण भघवान का निश्चय-उपासना का ज्ञान दिया। अंत में संतोने गाँव में सत्संग की उत्तरोत्तर वृद्धि हेतु श्री नरनारयणदेव को प्रार्थना की।

(श्री नरनारायणदेव युवक मंडल - आजोल)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर सुरेन्द्रनगर कथा पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से मंदिर के महंत स.गु. स्वामी प्रेमजीवदनासजी की प्रेरणा से सुरेन्द्रनगर ८० फिट के रोड के विस्तार में प.भ. पी.ए. पटेल साहबने यजमानपद पर ता. ७-६-१६ से ता. ११-६-१६म को श्रीहरि लीलामृत ग्रंथ की रात्रि कथा पूजारी स्वामी नित्यप्रकाशदासजी तथा पू. स्वा. त्यागवल्लभदासजीने की। आसपास के विस्तार के अनेक भक्तोने कथा श्रवण की। संत गणो में से मूली, सायला, रतनपर के संतगण पधारे थे। समग्र प्रसंग के सबा संचालन शा.स्वा. प्रेमवल्लभदासजी ने किया। समग्र आयोजन कोठारी स्वामी कृष्णवल्लभदासजी के मार्गदर्शन से श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने किया था। (शैलेन्द्रसिंह झाला)

श्री स्वामिनारायण मंदिर रतनपर १२ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा के.पी. स्वामी और पार्षद कालु भगत की प्रेरणा से अ.नि. अमृतबहन मोहनभाई अडालजा के स्मरणार्थ हेतु उनके परिवार की तरफ से श्री स्वामिनारायण मंदिर रतनपर का १२ वाँ वार्षिक पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया। पाटोत्सव के अंतर्गत ता. १२-५-१६ से ता. १९-५-१६ तक श्रीमद् सत्संगिजीवन रात्रि सप्ताह पारायम शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी (एप्रोच मंदिर) के वक्तापद पर की गयी। यजमानश्री बाबुभाई अडलाजा परिवारने अलौकिक लाभ लिया। कांकरिया, मूली, सुरेन्द्रनगर के संतगण तथा सांख्ययोगी बहने पधारी थी। ठाकुरजी का अभिषेक, अन्नकूट तथा महापूजा का आयोजन किया गया। संतोने सर्वोपरी श्रीहरि की शुद्ध उपासना तथा धर्मकुल की निष्ठा समझायी। श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के प्रेरणात्मक सेवा की।

(पा. कालुभगत - रतनपर)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्युस्टन (आई.एस.एस.ओ.) मंदिर श्रीमद् भागवत कथाका आयोजन

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्युस्टन (अमेरिका) में श्री वांके विहारी परिवारकी तरफ से वृंदावन (भारत) से पधारे हुए आचार्य मृदुल क्रिष्णा गोस्वामी के वक्तापद पर २९ मई से ४ जून तक सुंदर कथा का आयोजन किया गया। स्वामी भक्तिनंदनदास तथा निलकंठ स्वामीने इस प्रसंग का सुंदर आयोजन हरिभक्तो के साथ-सहकार से किया। भव्य पोथीयात्रा का आयोजन किया गया। सेवा करने वाले यजमानो तथा मेहमानो का संमान किया गया। मंदिरकी युवा कमिटीने प्रेरणात्मक सेवा की।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की कृपा से सत्संग में खूब प्रगति है।

(प्रविण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया (अमेरिका आई.एस.एस.ओ.) मंदिर में सत्संग सभा

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से कोलोनीया मंदिर के पूजारी पार्षद मूलजी भगत की प्रेरणा से हरिभक्तो द्वारा जून महिने में प्रथम सप्ताह के शनिवार की शाम को ५ से ८ तक मंदिर के सभा मंडप में सुंदर स्तसंग सभा का आयोजन किया गया।

धून, कीर्तन, के बाद मूलजी भगत ने भी नंद संतो द्वारा रचित कीर्तनो को गवाया । सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान की उपासना और उन पर अतूट श्रद्धा रखने हेतु उपदेश किया। युवास त्संगीजओं में आगामी कार्यक्रमो को वांजे का आयोजन किया गया। ठाकरुजी की आरती, बोग, प्रसाद करके यजमानो का सन्मान किया गया।

(प्रविण शाह)

छपैया में पारसीपनी (आई.एस.एस.ओ. अणेरिका) श्री स्वामिनारायण मंदिर

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तता प.पू. बड़े महाराजश्री प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से पारसीपनी मंदिर के मंहत स्वामी सत्यस्वरुपदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर पारसीपनी में जून के प्रथम सप्ताह के शनिवार साम ५ बजे सभी हरिभक्तो की उपस्थिति में सुदंर सत्संग सभा का आयोजन किया गया। मंदिर में सेवा देनेावले काउन्सीलेमने तथा कम्युनीट लीडर श्री जीगर शाहने सभा में उद्बोधन किया। सभा में धून-भजन-कीर्तन करके ठाकुरजी की आरती थी। सेवा करने वाले यजमानो का सन्मान महंत स्वामीने किया था। धर्मकुल की कृपा से यहाँ सत्संग प्रवत्ति अच्छी चल रही है।

(प्रविण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर विहोकन (आई.एस.एस.ओ. अमेरिका) २९ वाँ पाटोत्सव

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से, समग्र धर्मकुल की प्रेरणा से मंदिर के महंत नरनारायण स्वामी के मार्गदर्शन से ता. १९-५-१६ से ता. २२-५-१६ तक श्री स्वामिनारायण मंदिर विहोकन का २९ वाँ पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया।

पाटोत्सव के अंतर्गत श्री पुरुषोत्तम प्रकाश ग्रंथ की त्रिदिनात्मक कथा स.गु. शा.स्वा. सत्संग भूषणदासजी (धोलका मंदिर) ने वक्तापद पर की, अ.नि. डाहीबहन पुरुषोत्तमदास पटेल के स्मरणार्थ हेतु श्री प्रविणभाई पटेल (करजीसण) की तरफ से की गयी। इसो चेप्टरो में मंदिरो से पधारे महंत स्वामी के हाथों से ठाकुरजी का षोडशोपचार अभिषेक अन्नकूट आदि कार्यक्रम किये गये। संतोने भगवान तथा श्रीहरि के प्रति निष्ठा रखने की बाते कही। पाटोत्सव के मुख्य यजमान, सह यजमान तथा समग्र वर्ष दरम्यान सेवा करने वाले भक्तो की महंत स्वामीने प्रशंसा की आगामी ३० वाँ पाटोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के सानिध्य में मनाने की घोषणा महंत स्वामी स्वामीने की। सभी भक्तोने दर्शन करके, कथा श्रवण के बाद महाप्रसाद ग्रहण किया।

(बलदेवभाई पटेल)

નીચેના મહામંદિરોમાં નિત્ય દર્શન માટે

જેતલપુર : www.jetalpurdarshan.com
મહેસાણા : www.mahesanadarshan.org
છપૈયા : www.chhapaiya.com
ટોરડા : www.gopallalji.com
નારણઘાટ : www.narayanghat.com
વડનગર : www.swaminarayanmandirvadnagar.com
પ્રયાગ : www.prayagmilan.org
અયોધ્યા : www.ayodhyaswaminarayanmandir.com
ઈડર : www.gopinathjiidar.com
નારણપુરા : www.sankalpmurti.org

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

(१) मूली मंदिर में ठाकुरजी का चन्दन चर्चित दर्शन । (२) नारायणघाट श्री घनश्याम महाराज का चन्दनानुलिप्त दर्शन । (३) इडर मंदिर में ठाकुरजी का चन्दन चर्चित दर्शन । (४) पेथापुर मंदिर में ठाकुरजी का चन्दन चर्चित दर्शन । (५) क्लीवलेन्ड (अमेरिका) मंदिर में ठाकुरजी का चन्दन चर्चित द्रशन । (६) विहोकन (अमेरिका) मंदिर का २९ वें पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी का अभिषेक करते हुये संत तथा हरिभक्त ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/15-17
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2017

(१) सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के चन्दन चर्चित विग्रह की आरती उतारते हुये प.पू. बड़े महाराजश्री ।(२) श्री नरनारायणदेव को केशर स्नान कराते हुये प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री तथा दर्शन का लाभ लेता हुआ यजमान परिवार

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का गुरु पूजन - गुरु पूर्णिमा

गुरुपूर्णिमा

मंगलवार ता. १९ जुलाई २०१६ प्रातः ८-३० बजे

प.पू. भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का प्रागट्योत्सव

शुक्रवार ता. २९ जुलाई २०१६ प्रातः ८-३० बजे

स्थल : श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अमदावाद-३८०००१.

Praful Kharsani